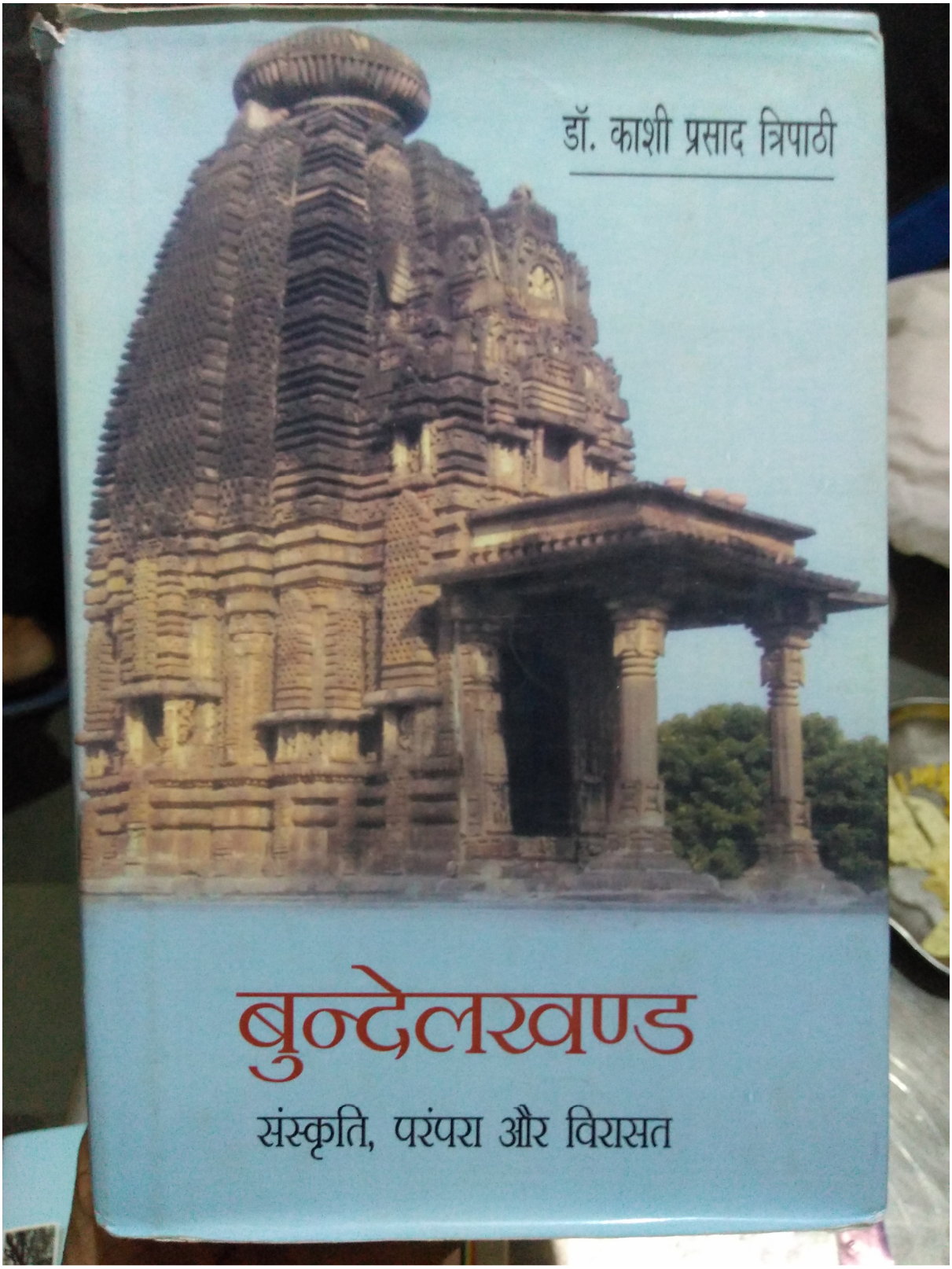
डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी
बुन्देलखण्ड
संस्कृति, परंपरा और विरासत

हैं। चंदेरी से संलग्न भामौन एवं भियांदांत जैन क्षेत्र भी देखने योग्य हैं।

14. अतिशय क्षेत्र बंधा, जि. टीकमगढ़

टीकमगढ़-निवाड़ी-झाँसी बस मार्ग पर टीकमगढ़ से 40 किमी. दूर बम्हौरी-बराना ग्राम है, वहाँ से दक्षिण की ओर 10 किमी. कच्चा मार्ग से चलकर बंधा दिगम्बर अतिशय क्षेत्र पहुंचा जाता है। बंधा में तो जैन मूर्तियों का भंडार है जो आसपास के क्षेत्र से संग्रहीत की गई हैं। क्षेत्र दर्शनीय है।

15. नावागढ़ (नावई), जि. ललितपुर

नावागढ़ जिसे नावई भी कहा जाता है, कबराटा ग्राम के निकट है। यह क्षेत्र बस मार्ग से विमुख है। यहाँ के लिये टीकमगढ़-बड़ा गाँव बस मार्ग से, समर्रा, अजनौर से कच्चे मार्ग से तथा महरौनी-सोजना बस मार्ग से गुढ़ा एवं सोजना से कच्चे मार्ग से जाया जाता है। यहाँ एक भौहरे में जैन मूर्तियां भारी मात्रा में

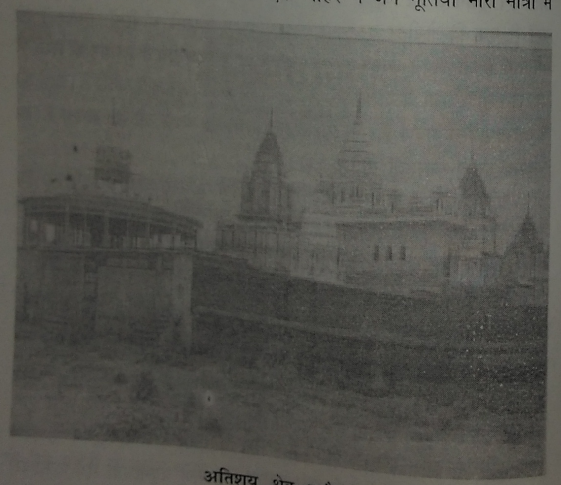

अतिशय, क्षेत्र, पपौरा

संग्रहीत हैं। इस अतिशय क्षेत्र का निर्माण श्रेष्ठि रत्नपाल ने कराया था जिसे वृ. जय कुमार निशान्त ने आधुनिक स्वरूप दिया है। जो दर्शनीय है।

16. अतिशय क्षेत्र, पपौरा, जि. टीकमगढ़

पपौरा अतिशय क्षेत्र टीकमगढ़ से 5 किमी. दूर टीकमगढ़-सागर बस मार्ग पर स्थित है। एक विशाल परकोटे के अन्दर 108 शिखर युक्त विशाल मंदिर समूह अवलोकनीय है। प्राकृतिक परिवेश रमणीक है। यहाँ के मंदिर 12वीं सदी से 20वीं सदी तक के स्थापत्य कला के नमूने हैं। एक चौबीसी एवं बाहुबली का मंदिर तो विशेष दर्शनीय है। पपौरा परिक्षेत्र में 4 धर्मशालायें हैं, जिनमें 125 कमरे एवं 5 हाल हैं। कुआं, नल, पानी और बिजली की समुचित व्यवस्था यहाँ है। यहाँ जैन समाज के शादी-ब्याह एवं सामाजिक सम्मेलन होते रहते हैं। दिगम्बर जैन मुनियों का समागम यहाँ नित्य की बात है। भक्तों, अनाथों का यह आश्रय स्थल है।

पपौरा जैन क्षेत्र से संलग्न माडूमर ग्राम है। ग्राम के मध्य में एक टीला है, जिसके आसपास हिन्दू धर्म के देवी-देवताओं की मूर्तियां प्राप्त हो जाती हैं। ऐसा आभास होता है कि टील के नीचे महादेव मठ दफन है। ग्राम के तालाब के पास दो विशाल शिलालेख-शिलाखंड पड़े हैं। अनेक शिलालेख यहाँ देखे जा सकते हैं।

17. सिद्ध क्षेत्र अहार, जि. टीकमगढ़

टीकमगढ़ से अहार दो मार्गों से जाया जा सकता है। प्रथम टीकमगढ़-बल्देवगढ़ बस मार्ग पर 15 मील (22 किमी.) पर अहार तिगैला है। वहाँ से 6 किमी. पक्के मार्ग से चलकर अथवा बस से अहार पहुंचा जाता है। दूसरा मार्ग टीकमगढ़ से अहार वाया नैनवारी नारायणपुर जाया जाता है। यहाँ पहुंचने के लिये दोनों मार्गों से बसें उपलब्ध रहती हैं।

जैसे ही आप अहार तिगैला पहुंचते हैं तो दक्षिण दिशा की सड़क पर विशाल 'विद्यासागर' द्वार है, उसके नीचे से विन्ध्य की शैल शिखरों के किनारे-किनारे 5 किमी. लम्बे सरोवरों को पार करते हुए अहार सिद्ध क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाते